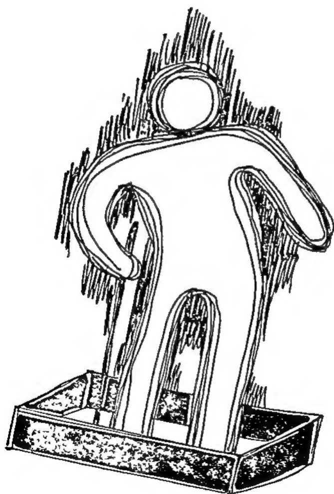
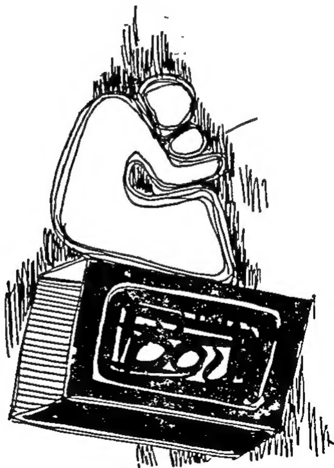
ਕੈਲਾਸ਼ ਗੌਤਮ



सीली माचिस की तीलियाँ



प्रकाशक
शब्दपीठ
आनन्द भवन के सामने
कर्नलगंज, इलाहाबाद-२११००२

•

मुद्रक
राज लक्ष्मी प्रेस
२ सी/१ चिन्तामणि घोष रोड
कटरा, इलाहाबाद-२११००२

•

आवरण एवं सज्जा
इम्पैक्ट, इलाहाबाद-२११००१

•

मूल्य
तीस रुपये

•

प्रथम संस्करण : १९८४ ईसवी

पिता जी

को

पुण्य स्मृति में

अनुक्रम

•

• • •

पाठकों से निवेदन



यह मेरा पहला कविता संग्रह है। ये कविताएँ सन् बहत्तर से लेकर जुलाई सन् चौरासी के बीच लिखी गयी है। ज्यादातर कविताएँ प्रतिबद्ध मन से लिखी गयी हैं। 'प्रतिबद्ध' शब्द मैं जानबूझ कर इस्तेमाल कर रहा हूँ। वह इसलिए कि हास्य-व्यंग्य के नाम पर हिन्दी में ज्यादातर फूहड़ और अश्लील कविताएँ लिखी गयी हैं और लिखी जा रही हैं। इससे न सिर्फ हिन्दी-कविता की छवि धूमिल हुई है, बल्कि श्रोताओं और पाठकों की स्वस्थ मानसिकता भी कुत्सित प्रयोगों का शिकार हुई है। यही कारण है कि मचीय कवि दो नम्बर के कवि गिने जाते हैं। मुझे यह सब देख सुन कर बड़ी तकलीफ हुई। मैंने निर्णय लिया कि इस लकीर को छोटा साबित करना चाहिए। और मैंने तथाकथित भाँडो-चारणों और नौटंकी के जोकर की हैसियत वाले कवियों के बीच मानवीय संवेदनाओं, अनुभूतियों, सामाजिक और राजनीतिक विसंगतियों को स्वस्थ-सुन्दर और आकर्षक ढंग से स्थापित करने का एक छोटा सा प्रयास शुरू किया। मित्रों ने इस प्रयास को हाथो-हाथ लिया, तारीफ की और छोटी बड़ी गोष्ठियों में इन कविताओं को बहस का विषय भी बनाया। मैंने चुटकुलों को कविता का विषय नहीं बनाया।

इसलिए कि केवल मंच मेरा लक्ष्य कभी नही रहा है। इतना जरूर है कि तालाब की सफाई के लिए मुझे कीचड़ मे उतरना पड़ा है। बिना उतरे यह संभव भी तो नहीं था।

दूसरी बात मुझे इन कविताओं की भाषा के बारे मे कहनी है। इनकी भाषा, सीधी, सपाट और बोलचाल की भाषा है। वह भाषा जिसे छात्र, अध्यापक, मजदूर, वकील, डॉक्टर, इंजीनियर, किसान और व्यापारी यानी हिन्दुस्तान का आम आदमी बोलता है। भोजपुरी और अवधी के ठेठ मुहावरे जहाँ बहुतायत से मिलेंगे, वही अँग्रेजी और संस्कृत के शब्द भी छिटपुट और इक्का दुक्का ही सही, लेकिन महज और सार्थक रूप मे जुड़े हुए मिलेंगे। ऐसे मुहावरो, लोकोक्तियो और शब्दों का प्रयोग अनायास हुआ है, सायास नही। कविताएँ आम आदमी के लिए लिखी गयी है। इसलिए भाषा भी आम आदमी की ही है। कही भी हमारे किसी पाठक को शब्दकोश खोजने की जरूरत नहीं पड़ेगी। जो भाषा मैं खाते-पीते, उठते-बैठते यार-दोस्तो में बोलता हूँ, वही भाषा मै लेखन मे भी इस्तेमाल करता हूँ। दुहरी भाषा न मैं जीता हूँ, न मुझे पसद है। ठेठ गाँव का रहने वाला हूँ, आरोपित जिन्दगी जीना मेरे बूते के बाहर है।

एक बात और, इस संकलन की लगभग सभी कविताएँ हिन्दी की प्रमुख पत्र-पत्रिकाओ मे छप चुकी हैं। और हमारे सुरुचि सम्पन्न पाठकों ने इन्हें खूब सराहा है। इसके लिए मैं 'धर्मयुग', 'कोशा', 'सक्रान्ति', 'नये-पुराने', 'आज', 'अमृत प्रभात', 'जागरण', मधुप्रिया' और 'ज्ञानवापी' परिवार के प्रति विशेष आभारी हूँ। ये कविताएँ कवि-सम्मेलनो मे भी बड़े शौक से सुनी जाती हैं। मैं अपने उन तमाम विवेकशील श्रोताओ के प्रति भी आभारी हूँ, जिन्होने इन्हें मन से सुना है और खुल कर सराहा है। अहिन्दी भाषा-भाषी इलाको मे भी ये कविताएँ बड़े सहज और सरस वातावरण मे सुनी-सराही गयी हैं। 'अफसोस यही है' कविता से प्रभावित हो कर स्व० गोपेश भैया ने रूसी भाषा में इसका अनुवाद भी किया है। इलाहाबादी पारिवारिक गोष्ठियो मे अक्सर गोपेश जी पीठ ठोकते और मुस्कुराते हुए बोल पड़ते थे 'हाँ प्यारे ! अब लगे हाथ बाँ वताशे वाली भी हो जाये'। मै गोपेश जी के उस निश्छल स्नेह के प्रति मन से कृतज्ञ हूँ। गोपेश जी से मिलवाया था स्व० उमाकान्त मालवीय ने। मालवीय जी में एक कमजोरी थी। अच्छी रचना को, जब तक वह दस-बीस लोगो को सुनवा नहीं लेते थे, तब तक उन्हे चैन नहीं मिलता था। आज

वैसी कमजोर मानसिकता का एक भी स्नेही कवि हमारे आस-पास नही है। मेरी कविताओं का संकलन देखने की उनकी बडी इच्छा थी, लेकिन अफसोस …। यह भी कैसी विडबना है कि जब उमाकान्त जी थे, तब शिवकुमार सहाय जी से जुडा नही था, और जब शिवकुमार जी से जुड़ा, तो मालवीय जी नही रहे। संकलन देख कर सचमुच उन्हे प्रसन्नता होती ऐसा मुझे विश्वास है। रात मे चाण्डाल चौकड़ी (जगन्नाथ सहाय वर्मा, अमरनाथ श्रीवास्तव उमाकान्त मालवीय, ओ॰ पी॰ भार्गव और दया सरन सिन्हा) की बैठकी भी भार्गव साहब के घर पर होती। अब अगर बैठकी होगी भी, तो उस आदमी की कमी बनी ही रहेगी। हमेशा-हमेशा के लिए वह कोना खाली रहेगा। सन् बहत्तर से ले कर छिहत्तर के बीच की लिखी गयी कविताओं के साक्षी और प्रेरणा स्रोत रहे हैं, डॉ॰ अशोक शर्मा, प्रवक्ता, हिन्दी विभाग, धर्म समाज डिग्री कालेज, अलीगढ। जब कोयले के अभाव मे नयी-पुरानी चिट्ठियाँ जला कर रात मे रोटियाँ बनती थी, फिर दिन भर की लिखी कविताएँ सुनी सुनाई जाती थी। उस कडकी मे भी हम दोनो एक दूसरे के सहयोगी और सहभागी बनते थे, उन दिनो अशोक पढ रहा था। आज जब ये कविताएँ संकलित हो रही है, तो बरबस दारागंज और बहादुरगंज के मकान (अपने नही किराये वाले) आँखो में घूम-घूम जाते हैं और कानो मे गूँजने लगते है, घर की सीढ़ियाँ चढते अशोक के शब्द, "क्यो बे! कुछ बनाये-वनाये हो कि आज भी कविता ही लिखते रह गये?" सचमुच उन दिनो का और अशोक का मैं बहुत-बहुत आभारी हूँ।

इस संकलन की कविताएँ पत्र-पत्रिकाओ मे ही छप कर रह गयी होती, लेकिन मैं हार गया अपने जिद्दी और अडियल मित्र डॉ॰ अशोक त्रिपाठी से। उन्होने अंतत मुझसे यह काम करवा ही लिया। क्योकि हिन्दी प्रकाशकों के विषय में मेरी कोई बहुत अच्छी धारणा नही रही है—सिर्फ उनकी व्यावसायिक मानसिकता और साहित्यकार को बँधुआ, भुक्खड और अपना दरबारी बनाये रखने वाली कुत्सित मनोवृत्ति के कारण। लेकिन शिवकुमार सहाय जी से मिल कर लंका मे विभीषण की पहचान बनी। और मैं अशोक की जिद्द का लोहा मान गया। कोच-कोच कर सोते से जगा जगा कर इसकी पाण्डुलिपि तैयार करायी गयी। मैं जितना शिवकुमार सहाय का आभारी हूँ, उतना ही डॉ॰ अशोक त्रिपाठी का। क्योंकि जब अशोक ने संकलन छपाने की बात की तो मैंने कहा 'यार! क्या होगा छपा कर। पत्नी कहती है मैंने कविता लिख कर गलत किया। अब और ज्यादा गलत नही होना चाहता।… दुर्भाग्य

से पत्नी वहीं बैठी थी। अशोक ने बड़े तपाक से कहा 'सो तो ठीक ही है गौतम जी! लेकिन अब छपा कर उसका प्रायश्चित भी कर लीजिए।' अतः मेरे पाठक बन्धुओ! यह वही प्रायश्चित है। वैसे एक बात आप अपने तक ही रखियेगा, किसी से कहियेगा नहीं। मैं फिर गलती करूँगा और फिर प्रायश्चित करूँगा। यह इसलिए लिख कर दे रहा हूँ, ताकि सनद रहे और वक्त-जरूरत पर काम आये। अगर यह संकलन हमारे स्नेही पाठकों की आलोचना का विषय बन सका, तो मैं इसे अपना अहोभाग्य समझूँगा।

आकाशवाणी केन्द्र, इलाहाबाद —कैलाश गौतम
स्वाधीनता दिवस, १९८४ ईसवी

सीली माचिस की तीलियाँ

शहर

कितना अजीबोगरीब है
यह शहर भी !

सूर्योदय की तरह नया
सिर चढ़े बेटे की तरह प्यारा
और धारोष्ण दूध की तरह
मीठा लगता है

छूते ही बिछ जाता है रेशे रेशे
जैसे नीम की टटकी दातून हो

रोआं रोआं भीन जाता है
चाय की गर्माहट सा

कब कहाँ पहलू बदलता है बोझ
कैसे कैसे साथ चलता है बोझ
इसका कोई ठीक नहीं है ।

अँधेरी रात के सन्नाटे में
पाँव की बोलती पायल
अभिसारिका के लिए
बोझ बन जाती है, जब कि
पीठ पर अपना समूचा भविष्य लादे
कोई राणाप्रताप की तरह
बाधाओं के बीच से,
तीर की तरह
सीधा निकल जाता है ।

दोस्तों की मेहरबानी

मैं
कुछ ऐसे लोगों से
घिरा हुआ हूँ
जो प्रहार आयुधों से
करते हैं
प्रायश्चित शब्दों से।

मैं आयुधों से ज्यादा
शब्दों से घायल होता हूँ
इसीलिए मेरे तथाकथित दोस्त
मेरी इस कमजोरी का
दुहरा फायदा उठाते हैं
वार, आयुधों से भी करते हैं
और शब्दों से भी।

अक्सर ऐसा हुआ है कि
आयुधों के घाव

भर गये है
शब्दों के नही।

आज, जो
मेरे होठो पर ताला है
और आँखों में पानी है
यह भी,
दोस्तो की मेहरबानी है!

अफ़सोस यही है

वैसे यह बरसात बुरी नहीं है
लेकिन पानी बताशे पर पड़ रहा है
अफ़सोस यही है।

ग्रहग्रहीत से लेकर वारुणी तक
लोग-बाग जी रहे है
कुछ समझ मे नहीं आता कि
हलाहल उगल रहे है कि पी रहे है।

रास्ते भी चलते-चलते, सहसा
मशीनों की तरह रुक जाते हैं
अपने से उठने का नाम नहीं लेते
इतना ज्यादा वे झुक जाते हैं।

फूल दो फूल की बात होती
तो कोई बात नहीं, लेकिन

माली की आँख में
बाग का बाग गड़ रहा है
अफसोस यही है !

पानी में धोबी के पाँव नहीं सड़ते
वरदान है कि अभिशाप है ?
चींटियाँ हलवाई के घर नहीं जाती
यह पुण्य है कि पाप है ?

जो कुछ भी हो
देखने से यही लगता है कि
घाव खुला नहीं है
बच्चा रोते-रोते मर गया है
बस डिठौना धुला नहीं है।

चौधरियों के कायाकल्प पर
मुझे कोई एतराज नहीं है
लेकिन बिरादरी का भविष्य बिगड़ रहा है
अफसोस यही है !

पितरों का कम एहसान नहीं है
आँगन मे कुआं खोद कर मरे है
यह हरा भरा खेत, रातों-रात गधे
बाघम्बर ओढ़ कर चरे है।

वह दिन अब दूर नहीं
जब साझे में सलीब ढोना पड़ेगा
इसी बहाने हम सबको
एक दूसरे के करीब होना पड़ेगा
बरसात में आतिथ्य सत्कार से
मैं भागता नहीं हूँ लेकिन
ईंधन के लिए घर उजड़ रहा है
अफसोस यही है !

टूटी कमर लिए अब भी कुछ चीटे
गुड़ की भेली पर जुटे हुए हैं
'अशक्तानां परम साधु' की स्थिति है
वरना ये कम नहीं घुटे हुए हैं।

आगे छाती छूती विष बुझी संगीनें हैं
और पीछे पीठ छूते छुरे हैं
आदमी के नाते हम, दोनों के बीच हैं
इसीलिए दोनों की आँख में बुरे हैं।

मानता हूँ भलाई करना गुनाह नहीं है
लेकिन अंधे रहनुमा का साथ देने में
कारवाँ पिछड़ रहा है
अफसोस यही है !

नाव नदी और तूफान

नावो का गला घोंटने में माहिर तूफान
अभी मरा नही, जिन्दा है
बेहतर है तट पर ही नाव बँधी रहने दे।

बेमिसाल होते हुए भी
नाव नदी का रिश्ता
मोम की हथेली पर
जलती हुई मशाल सा लगता है।

और ये पाटिये जिन्हे
नमक अलग से खाने की आदत है
पगन मे खायेगे जरूर, लेकिन
अपनी आदत से बाज नही आयेंगे।

सब के सब खाल ओढे बैठे है—
अलग मुद्राओं में

और यह सोच भी रहे हैं कि
कौन सा अंग हम पहले छुपाएँ
पूँछ या मुँह जिससे,
शेर सब तुरत समझें
और स्यार ?
—दो चार सदी बाद।

चूहे और बाँसुरी वाला

चूहे फिर वापस आ गये
घरो दफ्तरों और खेतों मे
फिर नई-नई बिलें
मिलने लगी हैं।

और तो और
खबरें भी सावुत नही मिलतीं
बहुत कुछ अपनी ओर से
जोड़ कर पढ़ना पड़ता है।

कहाँ गया वह बाँसुरी वाला
जिसने बड़े दावे के साथ
यह कहा था कि—
'चूहे दुबारा नहीं आयेंगे'
लेकिन चूहे आ गये।

खोजो ! खोजो ! खोजो
उस बाँसुरी वाले को खोजो
और उससे पूछो कि क्यो भाई !
यह सब कैसे हुआ ?
क्यों हुआ ?
और कहाँ गया तुम्हारा दावा !
इसके लिये कौन जिम्मेदार है
तुम ?
तुम्हारी बाँसुरी
या तुम्हारी बाँसुरी के दीवाने ?

तुरही वाले सुनो !

सुनो, यार ! तुरही वाले !
आखिर यह तुरही
तुम कब तक बजाओगे ?

हम इसे सुनते-सुनते ऊब चुके हैं
यार ! इस महफिल का भी
कुछ ख्याल करो ।

कड़वा, कसैला, अल्लम-गल्लम
ऐसा-वैसा भोंडा और बुरा ही सही
लेकिन कुछ और बजाओ
ताकि लोग जान सकें कि
तुम्हारे पास सिर्फ तुरही ही नहीं
कुछ और भी है ।

जब से तुम आये हो
हम सब टकटकी बाँधे
कान खोले बडी उत्सुकता से
तुम्हारी ओर निहार रहे है कि
अब कुछ नया होगा
लेकिन, तुम देश दुनियाँ से बेखबर
आँख मूंदे, बार-बार
वही तुरही बजा रहे हो।

खोलो यार! आँखे खोलो
और जरा महफिल की ओर देखो
कितने लोग तुम्हारे सामने से
खिसक चुके हैं
और कितने लोग
खिसकने की तैय्यारी मे है।

प्यारेलाल

प्यारेलाल !
आखिर वही हुआ
फिर बन गये न भकुआ !

बड़े हौसले से
झापड मारने गये थे
कैसा आज उलटा झापड़—
मुंह पर पडा है ।
कोई बात नही
तुम्हारा चमड़ा तो गैंडे का चमड़ा है ।

पिछले साल परिवार नियोजन शिविर से
भगे थे
और इस साल
काल-पात्र खोदने में लगे थे ।

खैर ! मलाल मत करो
फिर समय आयेगा
वही तुम्हे ठिकाने लगायेगा ।

आँखे हमें नही
किसी डॉक्टर को दिखाओ
चश्मे का शीशा बदलवाओ
दिमाग की सफाई कराओ
सही-सही काम नहीं करता है
शायद वह जाम हो गया है ।

फिर, अब तुम्हें
दिमाग की जरूरत ही क्या है ?
जो चाहते थे
वह काम हो गया है ।

अगर हो सके तो आओ
देश की तरक्की मे हाथ बँटाओ
खेतों में घास बहुत है प्यारेलाल !
कुछ अपनी कला
वहाँ भी दिखाओ ।

बहुत उड़ चुके हो प्यारेलाल !
अब नीचे उतरो
पुश्तैनी धंधा फिर से
शुरू करो ।

बेटे का भविष्य

जैसे जैसे
बेटा बड़ा हो रहा है
अपने पांव पर नहीं
बाप के सिर पर खड़ा हो रहा है।

अब उसे घर काटता है
दिन रात शहर की दीवारों पर
नारे लिखता है
पर्चे साटता है।

मैंने ज्योतिषी से पूछा
'महाराज ! इसका भविष्य कैसा है ?'
वह बोले, 'हिन्दुस्तान के नक्शे में
उत्तर प्रदेश जैसा है'

वैसे परीक्षक की नादानी से
नकल कराने वालों की मेहरबानी से
अगर हाई स्कूल पास हो गया
तो अभिनेता बनेगा
वर्ना देखियेगा, एक दिन वह
देश का बहुत बड़ा नेता बनेगा !

तुम्हारे हाथ

जैसे, फूले आँगन के केवड़े
याद आये तुम
और तुम्हारे गदुमी पीले
सुबह-सुबह की धूप ले रहे
नहर किनारे समवयस्क दो साँपपनीले
गोंइजी मछली से भी अधिक लचीले
चिकने चिकने हाथ याद आये।

जैसे, फूले आँगन के केवड़े
याद आये तुम और तुम्हारे
सुबह दोपहर शाम काली उजली रातों में
नदी, पहाड़ी, पार्क
पुल के नीचे रिमझिम बरसातों में
छत कमरे, आँगन, गलियारे
बस्ती के ओर छोर, मंदिर के पिछवारे,

सूने तट, बँधे-खुले बजरे में,
बँसवट में, कभी करीलों में
समतल पगडंडी पर,
चटियल मैदानों मे,
खाईं टीलो मे,
अक्सर, जो तकिया बने
झूला बने
हार बने हाथ याद आये।

जैसे, फूले आँगन के केवड़े
याद आये तुम!
और तुम्हारे
गहरे उतर गये
पुरवा के झोंके बादल आवारे
मान भरे मौसमी उलाहने
मीठे, प्यारे-प्यारे
याद आया वह सावन
जब हम लौटे थे
रूमाल भर मेंहदी लिए
तुम आँगन मे गुनगुना रहे थे,
दरवाजा बन्द किये
साँकल की आवाज सुने
खोले द्वार—लजाये, झिझके बोले
भीतर बैठो! तब तक हम—
ये कपड़े धो लें।

क्या कहूँ घाव के टाँके टूट गये
जैसे वह बँधा हुआ पल्लू
और वे सर्फ के झाग सने हाथ
याद आये !
जैसे, फूले आँगन के केवड़े
याद आये तुम !
और तुम्हारे · · ....

एक हड्डी पर कबड्डी

कल वे नाक के बाल थे
आँखों के तारे थे
बल्कि प्राणों से भी ज्यादा प्यारे थे
हम उनके थे
वे हमारे थे
बस यही समझिये कि
वे कैरम की क्वीन थे
हर वक्त हम
उन्ही में लवलीन थे।

लेकिन आज वे—
आँख की किरकिरी है
छाती के पत्थर है
पीठ के पहाड़ है
आस्तीन के साँप है।

हम उन्हे दूध की मक्खी की तरह
निकाल रहे है
देखिये न, जूते मार रहे है
कीचड़ उछाल रहे है
और वे हँस-हँस कर टाल रहे है।

लोग कहते है
उनकी शराफत है
सब कुछ झेल रहे है
एक हड्डी पर
कबड्डी खेल रहे हैं !

प्यारे !
सच तो यह है कि
शराफत नही है वेहयाई है
मात खाने के बाद
चाल समझ में आई है।

अपनी जगह छोड़ कर
दूसरे की जगह खड़े है
क्या इसलिए कि बिरादरी में
सबसे बड़े हैं
फिर बड़ा होना
कोई एहसान नही है
क्योंकि बड़ों का
कोई इत्मीनान नही है।

स्वर्ग का आँखों देखा हाल

अगर आप स्वर्ग जाना चाहते हैं
और वहाँ घर बसाना चाहते हैं
तो मेरी इतनी सी विनती है
मान लीजिए
और स्वर्ग जाने का इरादा
कुछ दिनों के लिए टाल दीजिए

मैं सीधे स्वर्ग से आ रहा हूँ
वहाँ का आँखों देखा हाल सुना रहा हूँ —

चारों तरफ़ हाहाकार है
गरीबी है भुखमरी है, मँहगाई है,
बेरोजगारी है, भ्रष्टाचार है
हरा-भरा बाग जल रहा है

सिर्फ कवि सम्मेलनों का बाजार
वहाँ अच्छा चल रहा है
खुले आम चोरी की कविताएँ पढी जा रही हैं
अखबारो की कटिंग काट-काट कर
कविताएँ गढी जा रही है

कम पढी लिखी और सो मो जैसी लड़कियों को
ठोक पीट कर कवयित्री बनाया जा रहा है
हिन्दुस्तान की मीरा और महादेवी कह कर
उन्हे उठाया जा रहा है

उच्चारण और व्याकरण से पता चलता है कि
ये कवयित्रियाँ किताबो से कितनी दूर है
और असमय ही कवयित्री होने के लिए
क्यो मजबूर है

इठलाती बलखाती बेचारी
मचों पर टूट रही है
दो चार मुक्तको की बदौलत
स्वर्ग लूट रही है

सबसे मजे मे संयोजक है
शान से बारह सौ पर हस्ताक्षर कराता है
और आँख दिखाते हुए
चार सौ पकड़ाता है

काफी हाउस छाप बुद्धिजीवियों का कहना है कि
कुछ उथल-पुथल होने वाला है
क्योंकि घटिया साहित्य का वहाँ भी बोलबाला है

प्रकाशक भी कविता के नाम से काँप रहे हैं
घटिया से घटिया उपन्यास
धड़ाधड़ छाप रहे हैं

प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद और
निराला जैसे वहाँ भी साहित्यकार हैं
लेकिन बेकार हैं
क्योंकि वहाँ के पाठकों पर वहाँ के
गुलशन नंदा, प्रेम वाजपेयी और वहाँ के
रानू सवार हैं।

और पत्र-पत्रिकाओं का भी
लगभग यही हाल है
अच्छे साहित्य का अकाल है

नंगी तस्वीरों वाली मैगजीनें
बाथरूम और बेडरूम में साथ साथ रहती हैं
छात्रावासों में तो जैसे
हाथों हाथ रहती हैं।

खेती बारी में भी कुछ-कुछ ऐसा ही हो रहा है
आम वही खा रहा है
जो बबूल बो रहा है

किसान अब हल कंधे पर नही
खूंटी पर टाँग रहा है
और नौकरी चूंकि
सरकार दे नही रही है
इसलिए वह दहेज में माँग रहा है

दहेज पूरा नही मिलने पर
बहुएँ सतायी जाती है
डरायी धमकायी और जलायी जाती है।

वैसे वहाँ लोग दुश्मन को खुद नही मारते
बल्कि टिकट कटा कर किसी भी ट्रेन में बैठा देते है
फिर सबेरे अखबार देख-देख कर
मजा लेते हैं।

धरना हड़ताल और भीड़ से
बिजलीघर का पता चलता है
पाँव की जमीन खिसक जाती है
सरकारी दफ्तर का बाबू जब रंग बदलता है

बड़ा से बड़ा पैसे वाला भी
कचहरी मे हाथ जोड़ देता है
वकील से बचा तो मुहर्रिर
और मुहर्रिर से बचा तो
साहब का अर्दली निचोड़ लेता है।

पता नही कैसे थाने में वलात्कार हो जाता है
जव कि पुलिस स्कूलो में रहती है
और जनता गरीव की औरत की तरह
सव कुछ सहती है

बिल्कुल हमारे देश की तरह
वहां भी आजादी है
रंगे सियारों की वारहो महीने चांदी है

हरिश्चन्द्र और युधिष्ठिर जैसे लोग
असमजस मे पड़े है
गिरती दीवारों के साये मे
हाथ जोड कर खड़े है

नियम और कानून जैसे
मेज के गुलदस्ते हो गये है
मैंने वहुत करीव से देखा है
अच्छे-अच्छे लोग
इस दौर में सस्ते हो गये है

जिसके हाथ-पांव मे छाले हैं
उसी को रोटी के लाले हैं

कपडों की तंगी है
कभी आदमी खुद नगा है
कभी वीवी नगी है

वहाँ भी मदारी की आँख मे रोटी है
जमूरे के पेट में छुरा है
फिर आप ही बताइये, ऐसे—
दो कौड़ी के स्वर्ग से
हमारा हिन्दुस्तान क्या बुरा है ?

मुर्दा एहसास

खुल गयी, खुल गयी, खुल गयी !
क्यों साहब ! दुकान ?
जी नही हुजूर !
बड़े-बड़े बर्तनों की कलई।

धुल गयी, धुल गयी, धुल गयी !
क्यों साहब ! कालिख ?
जी नहीं हुजूर !
पीढ़ियों से चली आ रही
घर की इज्जत।

कट गयी, कट गयी, कट गयी !
क्यों साहब ! पतंग ?
जी नहीं हुजूर !
पंचों की नाक।

गिर गयी, गिर गयी, गिर गयी
क्यों साहब बिजली ?
जी नहीं हूजूर
बाजार मे बनी बनायी साख।

सुनिए साहब !
जरा इधर आइये
कुछ नयी सुनाइये
यह सब तो होता रहता है
गधा खेत खाता रहता है
किसान बोता रहता है

ये सब पुराने लटके हैं
वही घिसी पिटी कहानी है
सच तो ये है कि हमारा
एहसास ही मुर्दा है, आज
कलई, इज्जत, नाक और साख की चर्चा
बिल्कुल बेमानी है।

एक आयोग और

मेरा बेटा ऐन मौके पर रोता है
मैंने बीवी से पूछा
आखिर ऐसा क्यों होता है ?

वह बोली क्या इस खानदान में
यह नया है ?
सास जी तो कहती है—
बेटा अपने बाप पर गया है।

वैसे इसका ऐन मौके पर रोना
मुझे भी बहुत खलता है
उस समय तो और
जब पिछवाड़े चाँद निकलता है।

बार-बार खिड़की तक जाती हूँ
उलटे पाँव लौट-लौट आती हूँ

तुम्हें क्या पता है
प्राण पत्ते की तरह काँपता है।

मेरी भी यही मंशा है कि
इसके ऐन मौके पर रोने के
कारण का पता लगाओ
खुद लगा सको तो खुद
वर्ना कोई आयोग बैठाओ।

लेकिन आयोग के अध्यक्ष से
साफ-साफ कहना
साहब यह मेरा निजी मामला है
जरा जल्दी फैसला करना

महीने दो महीने में ही
इस केस को निबटाना होगा
वर्ना एक और रोने लगेगा
उसका भी पता लगाना होगा।

आयोग की बात सुन कर
मुझे हँसी आ गयी,
बीवी खिसिया गयी

जैसा कि औरतों का स्वभाव होता है
मैंने बीवी को समझाते हुए कहा, सुनो—

पहले बेटे से पूछ लो कि वह
आयोग की बात मानेगा
आयोग जो कहेगा कसम खायेगा
और कसम खा कर सही सही बतायेगा
या चौधरी की तरह
मेरी भी नाक कटायेगा

इतना सुनते ही मेरा बेटा
ठठा कर हँस पडा और बोला कि
आप कैसे माँ बाप है ?
क्या अपने बेटे के लिए भी
कभी किसी ने आयोग बैठाया है
हमेशा दुनियाँ ने अपने मे
अपने बेटे को ऊपर उठाया है क्योंकि
आयोग दूसरे के बेटे के लिए होता है
अब तक का इतिहास यही है
दूसरे का बेटा गलत है
अपना बेटा सही है

वैसे मैं गरीब का बेटा हूँ
भूख से रोता हूँ
भूख मे रोने वाले बेटे
जब माँ बाप के सामने
हाथ फैलाते है
मेरी तरह गालों पर सिर्फ तमाचा पाते हैं

काश ! मैं भी किसी
बडी माँ का बेटा होता
बहती गगा मे हाथ धोता
रोज लाखों का वारा न्यारा होता
फिर भी माँ-बाप की आँखों का तारा होता
मैं इतना बड़ा बेईमान होता
कि मेरी मुट्ठी मे पूरा हिन्दुस्तान होता

लेकिन नही बेकार हो सकता हूँ
आवारा नही
अपाहिज हो सकता हूँ हत्यारा नही

क्योकि माँ बाप के खून का असर है
मेरे लिए जिन्दगी आज भी
लोहे का चना है
काँटो का बिस्तर है

समय माफिक रहा तो
श्रवण कुमारो में रहूँगा
वर्ना विद्रोह के ज्वलंत
उदाहरण की तरह
इतिहास के साथ-साथ
दीवारों में रहूँगा

नसबंदी का भूत

जब मेरी शादी का
पहला पहला साल था
नये नये जोड़ों का
बहुत बुरा हाल था

राम जाने क्या होने वाला था
शहर शहर गाँव गाँव चारों तरफ
नसबंदी करने वालों का बोलबाला था

सिर मुड़ाते ओले पड़े थे
हम दोनों मियाँ बीबी
मंदिर में हाथ जोड़ कर खड़े थे

'अब की राखि लेहु भगवान'
हम मन से गा रहे थे

फूल पर फूल और
प्रसाद पर प्रसाद चढा रहे थे

क्योंकि घर की सुन्दर बगिया मे
एक भी कली नही खिली थी
बस यही समझिये कि
हमारा एकाउन्ट खुला ही खुला था
अभी पास बुक नही मिली थी

नसबंदी करने वाले
सडको पर खड़े थे
'हम दो हमारे दो' मुंह में
कैंची हाथ मे पकड़े थे

कितने इधर उधर
गलियों मे फेरे लगा रहे थे
कितने घर आ कर
हमें ढाढस बँधा रहे थे

आने जाने वाले रिश्तेदारो पर भी
शक होता था
क्योंकि हर आदमी
केस के लिए रोता था

जो इस नये जोड़े को देखता
वही राल गिराता

'दो टूक कलेजे के करता'
ललचाता घर तक आता

तरह तरह की कसमें खाता
सफाई देता
फिर अपनी फँसी तनख्वाह की
दुहाई देता

अपना उल्लू सीधा करने के लिए
हमें उल्लू बनाता
संतानहीन मुहब्बत का
नुस्खा बताता

ऐसे माहौल में सब साले
अपने अपने शहर में भगे थे
और अपने अपने बहनोइयों से
नकली सर्टीफिकेट बनवाने में लगे थे

हमारा साला भी
अपने शहर से भाग कर
हमारे यहाँ आया हुआ था
उसके भी मन में
खानदान डूबने का भय समाया हुआ था

माल हमारा गल रहा था
साले का अखंड पाठ चल रहा था

जब कि मारे डर के
मुँह से एक शब्द भी
साफ साफ नही निकल रहा था

रोज खिचडी पकती थी
मगर दाल नही गलती थी

कटी बोगी के मुसाफिर
की तरह हम सब
परेशान थे
और प्लेटफार्म का रवैया देखते हुए
अपने अपने असबाब से
बराबर सावधान थे

ऐसे ही आँधी तूफान मे
एक दिन बीबी ने कहा
जरा बाजार चले जाइये
राशन नही है लेते आइये

मैंने कहा अपने भाई को भेज दो
सामानो की लिस्ट और पैसा
उसे सहेज दो

बाजार वही जायेगा
आखिर साला किस दिन
काम आयेगा

फिर अभी वह लड़का है
उसे डर किसका है

साला गुर्राने लगा
आँख दिखाने लगा
और हाथ नचा कर बोला 'जीजा जी
क्या देख कर आपने
लड़का कहा है बताइये ?
मैं आप से किस माने में
कम हूँ समझाइये'

मैंने कहा यार ! कैसे साले हो
अजीब खोपड़ी वाले हो
तुम्हारी बहन के भविष्य का सवाल है
और तुम्हारा ये हाल है
मेरी तो इम्तिहान की घड़ी है
देख रहे हो
पकी फसल खेत में खड़ी है

और मौसम
कितना खराब चल रहा है
हर वक्त छाती पर मूंग दल रहा है

साफ साफ क्यों नहीं कहते कि
बाहर निकलने से डरते हो
बहाना क्यों करते हो ?

हालांकि घर से वाहर निकलने में
मैं भी डर रहा था
रोब जमाने के लिए
साले से वहस कर रहा था

इसी बीच बीबी ने सूझ बूझ से काम लिया
घर के वाहर खूब वड़ा सा
परिवार नियोजन का बैनर टाँग दिया

परिवार नियोजन का गुण गाते
नारा लगाते
हम तीनो सडक पर आ गये
एक ही दिन में हम
अपने मुहल्ले मे छा गये

लोग हमसे घबराते थे
हम लोग अपने को
सही कार्यकर्ता बताते थे

और जब तक भेद खुले खुले
कि तब तक लोगों में
नया उत्साह जाग चुका था
काली आँधी का मौसम बदल चुका था
और नसबंदी का भूत भाग चुका था।

अंधे के हाथ बटेर

शायद
आपको इस बात का पता नहीं है
कि पानी अपनी जगह तलाश रहा है
लेकिन बाहर निकलने का
कोई रास्ता नहीं है

साँप नेवले बिल्ली चूहे बकरी बाघ
सब के सब बाढ़ के मारे हैं
भीतर-भीतर सब एक दूसरे की
आँख की किरकिरी हैं
ऊपर-ऊपर आँखों के तारे हैं

जमीन खुद थर-थर थर-थर
काँप रही है
अंगद का पाँव कहीं जमता नहीं है
शायद आपको इस बात का पता नहीं है

मौसम के खराब होने की सूचना है
बैरोमीटर का पारा नीचे
और नीचे हो रहा है
मुंह से चादर खींचिये न खींचिए
करवट बता रही है कि
कौन चैन की नींद सो रहा है

क्यों भाई !
संग्रहालय की शोभा बढ़ाने
आये थे और नुमायश में
धक्के खाते फिर रहे हो
कुछ तो अपनी उम्र का
ख्याल करो
इस उम्र में
इतना नीचे गिर रहे हो ?

मैं बचपन से
इन पेड़ों को देखता आ रहा हूं
इनमें फूल आते हैं, झर जाते है
फल कभी लगता नहीं है
शायद आपको इस बात का पता नही है

इतना तो आप भी मानेंगे कि
बबूल के पत्ते दोना नही होते
फिर भी आप प्रयास कर रहे है

ईख की सूखी पत्ती दिखा,दिखा कर
नीम चढ़ी तितलौकी मे
मिठास भर रहे है

बिना धुआं देखे भी
आग बुझाने का नियम है
लेकिन इस शहर मे चलता नही है
शायद आपको इस बात का पता नहीं है

आपके हाथ बटेर लग गयी है
इसका यह अर्थ नही कि
आप हुनरमद भी है
जितने नाक के बाल बने है
उनमे ही आस्तीन के सांप भी हैं
जयचद भी है

नौटंकी हो रही है ठीक है
लेकिन जोकर के माथे पर
राजा का मुकुट कभी फबता नही है
शायद आपको इस बात का पता नही है

एहसास

कल जिन्होने
आंधी पानी और तूफान में भी
जमीन तलाश कर
क्रांति बीज बोये थे
और यह सोच कर कि
आने वाली पीढ़ी का भविष्य
अच्छा होगा
जो माघ पूस की रात मे
बर्फ की सिल्लियों पर
नंगी छिली पीठ सोये थे
संगीनों पर उछाले गये थे
दीवारों में चुने गये थे
इसी खुले आकाश के नीचे
तमाम उम्र रुई की तरह
धुने गये थे
जानते हैं

आज वे कहाँ है ?
ताँबे के सिक्के जहाँ हैं

जिन्हे हम आप
अब अपने पास रख नही सकते
अगर रखे भी होंगे
तो, नये सिक्कों के सामने
हम उन्हें परख नही सकते

ऐसा करने वाला
विद्रोही करार दिया जायेगा
सीधे सीधे
मौत के घाट
उतार दिया जायेगा

पान की दुकानो पर
सैलूनों में या
कैलेन्डरों से रंगीन नमूनों में
जो कहने को बराबर साथ रहते हैं
जैसे अबोध शिशु के माथे पर
सपने में
दिवंगत माता पिता के हाथ रहते हैं

वह गाँधी जिनकी
कथनी और करनी में

वड़ा कम अन्तर था
या यह कहें कि जैसा उनका
वाहर था वैसा ही भीतर था

उन्हें तुम लोग आज
कैसे इस्तेमाल कर रहे हो ?
यार कमाल कर रहे हो !

तुम जब देश और आजादी की
बात करते हो
मैं घर चला आता हूँ
वहाँ भी मन नही लगता
तो झूठ क्यों बोलूँ
पिक्चर चला जाता हूँ

गाँधी मैदान की रोशनी की अपेक्षा
वहाँ का अँधेरा
कही ज्यादा सच बोलता है
मेरी तरह यह भी अपने को
अपने भीतर टटोलता है

यह कहना तो मुश्किल है कि
भीतर के अँधेरे में
सुरक्षा कितनी रहती है
और वाहर की रोशनी में

भय कितना रहता है
लेकिन इतना जरूर है कि
जिन्दा रहने का एहसास बना रहता है

वर्ना सड़क की भीड़ में खो जाने पर
यह एहसास नही होता कि
आदमी हूँ
आदमी की सज्ञा हूँ
कैलाश हूँ मैं
एहसास सिर्फ यह होता है कि
बोरे में बँधी
पानी में डूबी
एक सिर कटी लाश हूँ मैं

बरसात से पहले

अभी
सिर्फ बादल छाये हैं
और छाता बनाने वाले
आ धमके

आषाढ़ का पहला दौंगरा भी
अभी नही गिरा
लेकिन नदी किनारे के गाँव
आशंका से भर उठे हैं

ऊपर आकाश में
बादल डोलते हैं और
नीचे नदी किनारे के गाँव की
आँखों में
बीसियों नावें डोलती हैं

बाबू कल परसों से
कह रहे है कि
खड़ाऊँ का नया जोड़ा
अब जरूरी है

माँ कहती है
ईंधन को खुले में रखना
अब ठीक नहीं
घर की इज्जत है

बुढिया आजी अलग परेशान हैं
मंदिर तक जाने मे
छोटे-बड़े कई पनाले
पार करने होते है
मंदिर के बालमुकुन्द को
आजी के लिए
घर ले आना होगा

बीबी,
दिन में कई बार
टोक चुकी है कि
कच्चे धागे के दिन गये
लौकी की बेल धीरे धीरे
सयानी हो रही है उसे
अब मजबूत सहारे की जरूरत है

और मेरा बेटा !
गुल्ली डंडे में लैस
पड़ोसी लड़कों से पूछ रहा है
क्यों भाई रेनी डे हो सकता है ?

इन सबसे अलग थलग मैं
तिरपाल से ढँका
चीनी के बोरे की तरह
पसीज रहा हूँ

माना कि अभी बारिश नहीं हो रही है
सिर्फ बादल छाये हैं
लेकिन यह सत्य है कि
स्कूली लड़के की तरह
छाती से बस्ता चिपकाए
किसी भी दिन मुझे
खुले में दौड़ना पड़ेगा

बदनाम मुहरा

रघुकुल तिलक
मर्यादा पुरुषोत्तम राम !
आप सिर्फ कान के कच्चे
विचारों के ओछे और
स्वभाव से शंकालु ही नहीं
बल्कि
अवसरवादी राजनीतिज्ञ भी हैं

मेरे श्रद्धा विश्वास भक्ति
और पौरुष को
बार बार अपनी जरूरतों पर
भुनाने से
आप तनिक नहीं हिचके

बट्टा मेरे व्यक्तित्व पर लगा है
काम आप का बना है

कुल की मर्यादा
और पुरखो का हवाला देते हुए
हमेशा मुझे
पानी पर चढाये रखा
और मैं घिसता घिसता
बौना हो गया,
बौना सिर्फ बाहर से ही नही
भीतर से भी

आज मेरी सज्ञा
सैंकडो सवालो के बीच
सिर झुकाये खडी है
जैसे
अपने ही द्वारा रचे गये
जाले के भीतर
अधी गूंगी बहरी और
बिना रीढ की कोई मकडी है

सच !
कितना दबदबा था आपका
आप के भारी भरकम
आदर्शों का
कि जीवन भर मेरी गर्दन
सिर्फ ऊपर नीचे
हिलती रही

दाएँ बाएँ हिलाने की
सख्त मनाही थी
ऐसा दुस्साहस भला मैं
कैसे कर सकता था ?

मेरा 'रामानुज' अपने आप में
कितना बड़ा व्यंग्य बन गया
इसे सिर्फ मैं जानता हूँ

हुँकारी भरना मेरा पर्याय बन गया है
और मेरा समूचा कलेवर
एक अजीब तरह के कीचड़ में
सन गया है

मणिहारे साँप की तरह
हाथ मल रहा हूँ
सिर पटक रहा हूँ
मुँह छिपाने भर जगह की तलाश में
दर दर भटक रहा हूँ

अपने ही बहुचर्चित व्यक्तित्व के
आकाश में
अभिशापित कुहरा हूँ मैं
जिसके चेहरे पर लिखा है 'त्रेतायुग'
और पीठ पर लिखा है 'राम राज्य'
एक ऐसा बदनाम मुहरा हूँ मैं

अंधा कोयल

प्यारे भाई !
इस कोयल की बोली पर
मत जाओ,
यह बारहो महीने
इसी तरह बोलती है

जानते हो
यह कोयल जन्म से अंधी है
और मीठा बोलना
इसका पेशा है

प्यारे भाई !
अंधे सिर्फ सावन के ही नहीं होते
फागुन के भी अंधे होते है
जैसे कि यह कोयल

और फागुन ही क्यों
अब तो लोग
हर महीने अंधे हो रहे हैं
जिसे जब अंधा होने में
फायदा दिखाई पड़ता है
हो जाता है
और जब तक जरूरत पूरी नहीं हो जाती
तब तक अंधा बना रहता है

इस तरह अंधा होने का
यह सिलसिला
मैं अपने बचपन से देखता आ रहा हूँ

जब मैं अंधा हुआ था
उस समय भी कुछ कुछ
ऐसा ही माहौल था

आमों में बौर थे
लगन लगी देह सी धूप थी
हवा में महुवा तैर रहा था
दुनियां भर की चुहल
गुलाबी दुपट्टों की मुट्ठी में
कसमसा रही थी
उस समय भी
यह कोयल इसी तरह

गा रही थी
यानि कुल मिला जुला कर
भरपूर प्यार करने का मौसम था
और हमारे अधा होने के लिए
इतना सरोमामान काफी था

लेकिन
वह प्यार का मौसम
जिसे कोर्स बुक की तरह
हम पढ़े भी और
बेच भी दिए आधे दाम पर
हमे आज तक सालता है
और ऐसा इसलिए हुआ कि
प्रेम के अधे मुहूरत नही
जरूरत देखने हैं

प्यारे भाई !
मेरी जरूरत पूरी हो चुकी थी
लेकिन इस कोयल की जरूरत
अभी भी बरकरार है
अब इसे कौन समझाये कि
बौर किसी किसी आम में
आये है
सब मे नही
और जहां थोड़े बहुत बौर हैं भी

वहाँ आँधियों का खतरा
वना हुआ है

यह कोयल
इन सब नजारों से दूर है
उठती गिरती दीवारों से दूर है
लाल पीले अखबारों से दूर है
मँहगे रंगों से
भूखे त्यौहारों से दूर है
काले विल्लों और
परस्पर विरोधी नारों से दूर है

इसकी मीठी मीठी वोली पर
मत जाओ प्यारे भाई
इसकी वोली से वसंत नहीं आयेगा
और अगर कभी वसंत
आ भी गया तो
वह लाठियों के वल आयेगा
कोयल के वोलने से नही

यह कोयल वारहो महीने
इसी तरह वोलती है
और मीठा वोलना इसका पेशा है
इसकी वोली पर मत जाओ
यह कोयल अंधी है
जन्म से अंधी है

नागरिक होने के नाते

यह हमारा शहर है
मेरे दोस्त !
यहाँ के तौर तरीके, कायदे कानून
रीति रिवाज और लोग
सब के सब
देश दुनियाँ से परे हैं
यह एक और तरह का दुबई है

यह शहर जानते हो ?
बाहर से देखने पर
खूबसूरत खुशगवार और
दिलचस्प लगता है
लेकिन मैं
इसकी रग रग से वाकिफ हूँ

मैं जानता हूँ
यह शहर भीतर से
कितना खौफनाक है
कितना खूंख्वार है
कितना घिनहा और
कितना कुरूप है

यह शहर अपने आप में
एक तिलिस्म है
भूल भुलैया है
इसकी गलियों में सुरगें हैं
मैदानों मे जाल है, पैंतरे हैं
मुहरे है

इन सबसे जूझना
जिन्दगी को दुखात साबित करना है
और इनसे बच कर निकलना भी
आसान नहीं है
यहाँ रोटी मशक्कत से नही
हिकमत से मिलती है
टाँग खीचना
रोड़े अटकाना
बहती गंगा मे हाथ धोना
और दूसरे की आँखों में
धूल झोंक कर

अपना उल्लू सीधा करना
इसकी दिनचर्या है

यहाँ दुआ सलाम
हँसना बोलना
मिलना जुलना
धंधे से जुड़ा होता है
ईमानदार आदमी का
चेहरा
हमेशा उड़ा उड़ा होता है

हँसता मुस्कुराता आदमी
घर से निकलता है
पान खाने के लिए और
शहर की गलियाँ
उसे दबोच लेती है
यहाँ की सुरंगो का पेट
इसी तरह भरता है

हालांकि इस शहर में
कोतवाली भी है लेकिन
उसका होना कोई माने नहीं रखता
यहाँ की गलियाँ
यहाँ के मुहल्ले
यहाँ की सड़कें

यहाँ के चौराहे
गुंडों के नाम से जाने जाते हैं

दुश्मनी सेत मे नहीं
कुछ खिला पिला कर निकाली जाती है
और रोज एक नई लाश
टोलों मुहल्लो में
घर घर घुमायी जाती है
ताकि जो देखे वह सबक ले
और बराबर सावधान रहे

रात मे मेहमान को
स्टेशन से घर ले आने
या घर से स्टेशन पहुँचाने के पहले
बहुत कुछ सोचना पडता है

इस शहर में
जान माल की सुरक्षा की
कोई गारंटी नहीं है
अपने को
काँच के सामान की तरह
सँभाल कर रखना पडता है
क्योंकि चोट लगने और टूटने की
बहुत गुंजायश है

मेरे दोस्त ! तुम
हमारे शहर मे आ कर
दो चार रोज रहना चाहते हो
यही न !
लेकिन सुनो ! अभी नहीं
अभी नही मेरे दोस्त अभी नहीं
अभी इस शहर पर बीसवीं सदी
पूरी तरह से हावी है
कम से कम इस सदी को गुजर जाने दो

यह हमारा शहर है
मेरे दोस्त ! इसे
अपनी आँखों से नही
मेरी आँखों से देखो
मैं जानता हूँ
तुम एक मिनट भी
यहाँ नही टिकोगे
आओगे और आ कर
घटिया शहर में बढ़िया फिल्म की तरह
फ्लाप हो जाओगे

क्या यही चाहते हो ?
तो स्वागत है
आओ !
आओ !
आओ ! स्वागत है !!

बाढ़ की नाव

आने वाली नाव के इन्तजार में
हम सब गहरे
और गहरे और गहरे
पानी में उतरते जा रहे है
शायद
बाढ़ से घिरे लोगों का
यही हश्र होता है

देखते देखते
पानी श्मशान घाट से
चौक तक आ गया है
और हम हैं कि उसे
रामदल की तरह पूज रहे हैं

कटी बोगी के मुसाफिर भी
जैसे तैसे

अपना सफर तय कर लेते है
नौकरी से निकाले गये लोग भी
कहीं न कहीं पेट भर लेते हैं
आक्सीजन पर चल रहे मरीज के
सगे सम्बन्धी भी
थोड़ा बहुत सो लेते हैं
जिनका एक पाँव हमेशा
जेल मे रहता है
वे भी समय से
हाथ मुँह धो लेते हैं

लेकिन हम
इनमे से एक भी नही हैं
हम वे पखेरू है जिन्हे
जगल मे बिखरा चावल दीखता है
जाल नही
अभी भी लाठी भर जमीन
तलाश लेना है
लेकिन हम है कि
लाठी पकड़ने से शरमा रहे है
और धोखे पर धोखा खा रहे है

वैसे होने को
क्या नहीं होना
लेकिन माँ भी नही पूछती
जब तक बच्चा नही रोता

सीली माचिस की तीलियाँ

जिस तरह
मिर्च के गोदाम में
काम करने वाले
शुरू शुरू मे
बहुत छीकते है, लेकिन
धीरे धीरे वे अभ्यस्त हो जाते है
और एक समय ऐसा आता है
जब वे कतई नही छीकते—
उसी तरह
सीली माचिस की ये तीलियाँ भी
अपना जातीय सस्कार भूल गयी है
और
इस सीलन भरे अँधेरे की
बुनावट का एक हिस्सा होकर
रह गयी है

गद्दारी का इससे बड़ा सबूत
और क्या हो सकता है ?

अब तक तो
एक बहाना भी था कि
मौसम खराब है
बारिश हो रही है
धूप नहीं है
बर्फ गिर रही है
ओले पड़ रहे हैं
वगैरह वगैरह

लेकिन अब वह बहाना भी
झूठा साबित हो चुका है
दिन दिन भर चटख धूप
इन तीलियों के बंद दरवाजों को
थपथपाती है
आवाज देती है
लेकिन एक भी तीली
सांस नहीं लेती

जाने कौन सा भय समाया हुआ है ?
हारी हुई टीम के खिलाड़ी भी
इतना हताश नहीं होते
कुछ देर के लिए

उदास जरूर होते है
लेकिन मैदान नही छोड़ते

सीली माचिस की तीलियो !
सच सच कहना
क्या इस सीलन और अँधेरे का
दवाव अधिक है
या तुमने
अपना इरादा वदल दिया है

अजायबघर का घड़ियाल

इस अजायबघर में
एक ऐसा भी घड़ियाल है
जो रेत में खोयी नदी का किस्सा
गा कर सुनाता है
लोग सुनते हैं और
कुछ देर के लिए
दाँतों तले उँगली दबा लेते हैं

घड़ियाल भी कम चालाक नहीं है
बिल्कुल खामोश हो जाता है
उसकी आँखें भर आती हैं
आवाज भारी हो जाती है

दूसरों के बेटे चुराने
और मच पर खोये बेटे के बाप का

अभिनय करने में
इसे कमाल हासिल है

हालाँकि लोग उसके इस नाटक से
बखूबी वाकिफ है
लेकिन मजबूर है
इंसानियत के तकाजे से

जब जब उसे
चाय पान और सिगरेट की
तलब लगती है
कायदे के मुताबिक लोग
पेश कर देते है
और घड़ियाल फिर चालू हो जाता है
रेत मे खोयी नदी का किस्सा
उसके जबड़े से
झरने लगता है
छोटा बरई भी
बड़ा शीशा रखता है

जमाने को देखते हुए
यह कायदा कोई बुरा नही है
लेकिन मैं जब जब
दीवालों पर टँगे
मुर्दा घड़ियालों की ओर देखता हूँ

तो मेरी इच्छा
अजायबघर के इस घड़ियाल के
मुंह पर थूकने की होती है

किसी भी अवसरवादी
और सुविधाभोगी को
मैंने कभी प्रायश्चित्त करते नहीं देखा
कितना अच्छा होता
अगर वह नदी आज भी
बहती रहती
कम से कम यह घड़ियाल
आज आंखों से दूर तो होता !

अगर जिंदा होता तो नदी में होता
या फिर किसी दीवाल की
शोभा बन गया होता
इस तरह रोज रोज
हमें भुनाता तो नहीं ?

इसके रख रखाव में
जितना खर्च होता है
उसका कोई हिसाब नहीं है

मैंने देखा है यह घड़ियाल
बात की बात में

पूरी पीढी को गुमराह कर देता है
इसकी खूराक है मानव सस्कृति
सभ्यता और सवेदना

कभी कभी सोचता हूं कि
क्या जिदा रहने के लिए
मुझे भी घडियाल होना पड़ेगा
लेकिन अजायबघर भी मिलेगा
इसकी कोई गारटी नही है

जिसकी लाठी उसकी भैंस

मैं जानता हूँ
आप लाठी वाले है
किसी भी भैंस को चुटकियों में
दुह सकते है
बिना नाद और खूंटा गाड़े
उसे पाल सकते है
लेकिन एक बात आप से
पूछना चाहता हूँ
ईमानदारी से बताइयेगा
क्या पानी में गई भैंस आप
निकाल सकते है ?

आप वही लाठी वाले हैं न!
जिसकी लाठी एक बार
साँप मारने में टूट गई थी
और साँप भी निकल भागा था

सचमुच वह दिन बड़ा अभागा था
आज भी कलेजा काँप जाता है
वह दिन जब याद आता है

बहरहाल छोड़िए इस बात को
अगर लाठी में दम है तो
चलिए मेरे साथ
पानी में गई भैंस जहाँ है
यहाँ से भी ज्यादा रौनक वहाँ है

मेला लगा है, मेला
भैंस निकालने वालों का मेला
विदेशो में भी चर्चा है
लाखों की भीड़ है, करोड़ो का खर्चा है

हजारों टेण्ट गड़े है तम्बू तने है
सैंकडों तो गेट बने है
तरह तरह के शिविर खुले है
सब के सब दूध के धुले है

जहाँ भैंस निकालने वालो का डेरा है
वहाँ पुलिस का मजबूत घेरा है
पानी मे गई भैंस से
वहाँ इतनी आमदनी हो रही है

कि हर साल प्रदर्शनी पर प्रदर्शनी
हो रही है

उसे देखने के लिए लोग
टूटे पड़ रहे है
टिकट के लिए लड़ रहे है

उसी में किसी का सिर फूट रहा है
किसी का प्राण छूट रहा है

अजीव तमाशा है
अरे भाई ! पानी में गई भैंस है
कि देवरहवा वावा का वताशा है

कितने पैदल है, कितने सायकिल से
कितने ट्रेन की छतों पर बैठे हैं
कितने नई नई कारों में
जीपों में ऐंठे है

लोग चले जा रहे है भैंस निकालने
टिफिन लिए थर्मस लिए
नारा लगाती ठसाठस भरी वस लिए

कितने साले बीन वाले आये
और बीन वजाते वजाते

झाग फेंकने लगे
एक दूसरे का मुँह देखने लगे

एक ने तो भैंस के घुटनो मे
सिर भी दे दिया
लेकिन वाह रे भैंस वाह !
तुमने पागुर नही किया तो नही किया

अक्सर लोग आपस में वतियाते हैं
दुनियाँ भर के अकलमदो से
वह भैंस अकेली लड रही है
वल्कि भारी पड़ रही है

सुना है जिसकी लाठी होती है
उसकी भैंस होती है
आप लाठी वाले है चलिए न
कुछ माहौल वहाँ का वदलिए न
फिर हाथ मे लाठी है
तो काम लीजिए
या फिर लाठी मुझे दीजिए
आप मेरी कलम थाम लीजिए

लेकिन इस कलम के चलते
हाथ के कलम होने का खतरा है
क्या यह खतरा आप उठायेंगे

वाल्मीकि की धरोहर है
वाल्मीकि तक पहुँचायेंगे ?

फिर यह सब काम पत्रकारों का है
पत्रकार लिखें
हम क्यों बेकार लिखें

आश्चर्य है कि जिसे
पानी में गयी भैंस नहीं दिखाई पड़ती
कैसे उसे आसमान में उड़ता
हेलीकाप्टर दिखाई पड़ता है
वही हाल है कि भूखे बाज को
रात में भी कबूतर दिखाई पड़ता है

कैसे कैसे लोग आज कलम से
खेल करते हैं
जिसकी रोटी खाते हैं
उसी को ब्लैकमेल करते हैं

सच पूछिये तो
पानी में गयी भैंस को
कोई निकालना नहीं चाह रहा है
क्योंकि भैंस अगर निकल गई तो
हज़ारों लाखों सड़क पर आ जायेंगे
अभी तक जिनकी बीसों घी में है
कल वे क्या खायेंगे ?

सब अपना अपना भविष्य बाँच रहे हैं
इसीलिए भैंस के आस पास
नाच रहे हैं

पानी में गयी भैंस
बहुत लम्बी योजना है
यह कब तक चलेगी
लाठी वालों को सोचना है

भैंस निकालने जब
लाठी चलेगी
भैंस अपने आप निकलेगी
लाठी भीड़ भगाती चलेगी
रास्ता बनाती चलेगी

लाठी जिसके हाथ होगी
पानी में गई भैंस
उसके साथ होगी

केचुए का पर्याय

पहले
वह थोड़ा सा नरम पड़ा
फिर धीरे धीरे धनुप हुआ
और अब
रबर होने की तैय्यारी में
जी जान से जुटा है

ऐसा बात नहीं कि
उसके पास रीढ़ नही है
रीढ़ है मगर
बेचारी जरूरत और आदत की मारी है
नरम पड़ना
धनुप होना

और रबर की तरह फैलना
उसकी खानदानी बीमारी है

फिर यह भी तो है
केचुए का पर्याय
आदमियो में ही मिलता है
जानवरों में नही।

संस्कार

बेटे !
लड़ाई रोकना मत
लड़ते रहना वैसे ही जैसे
अकाल में गाँव का कुआँ लड़ता है
लड़ते लड़ते खाली हो जाता है
और फिर भरता है लड़ने के लिए
लड़ना और निरंतर लड़ना
अब हमारी परंपरा बन चुका है

यह मत भूलना कि
लकड़हारों के बीच
हरा पेड़ छोड़ कर आया हूँ
हरा पेड़
तुम्हें भी वही पाठ पढ़ायेगा
जिसे मैंने पढ़ा था,
मेरे पिता ने पढ़ा था

पिता के पिता ने पढा था
वही पाठ तुम भी पढना

वेटे !
लड़ाई रोकना मत लड़ते रहना
वैसे ही जैसे किसान हाकिम से लड़ता है
मजदूर मालिक से लड़ता है
लडते लड़ते किसान टूट जाता है
मजदूर लहूलुहान हो जाता है लेकिन
इतिहास इसी लड़ाई का साक्ष्य देता है

फिर वह भी कैसी लडाई है
जिसका इतिहास नही होता
हमारी लडाई का
कल भी एक इतिहास था
आज भी एक इतिहास है
और अगर लडाई बन्द नही हुई
तो भविष्य मे भी
इसका इतिहास सुरक्षित रहेगा

हमारी लड़ाई किसी घराने का
कालपात्र नही है
यह एक सस्कार है और सस्कार
पीढी दर पीढी चला करता है
मरता नही

दबा हुआ आदमी

इस भीड़ में
कोई आदमी
दबा हुआ लगता है
बहुत दबी दबी सी आवाज
किसी कोने से आ रही है

मैं

काफी देर से सोच रहा हूँ
कि आखिर इतना
दबा दबा स्वर
आदमी के अलावा
और किसका हो सकता है

भीड़ के बीचो बीच पहुँच कर मैं
और असमंजस में

पड़ गया हूँ
मुझे हर कोने मे
वही दबी आवाज सुनाई पड़ती है
लगता है हर कोने में
कोई न कोई आदमी ही दबा है
यह भी कैसा आश्चर्य है कि
हर दबे आदमी की आवाज
एक जैसी होती है

मैंने कई बार इस भीड़ में
दबे हुए आदमी को खुल कर पुकारा है
लेकिन पता नही क्या सोच कर
वह चुप लगा गया है

मैं सोचता हूँ
मुझे स्वयं दबे हुए आदमी के पास
पहुँचना चाहिए
शायद मुझे अपने करीब पा कर
कुछ खुल कर वह कह सके
क्योंकि दबे हुए आदमी के पास
कहने को
बहुत कुछ होता है

ट्रक

रात के सन्नाटे में
बेतहाशा भागता हुआ वह ट्रक
कहाँ जा रहा है ?

पता नहीं इसका ड्राइवर
सो रहा है कि जाग रहा है
या नशे में चला रहा है
कहीं किसी को कुचल कर तो नहीं भाग रहा है ?

पिछले दिनों जब एक स्कूली बच्चा दब कर मरा था
तब भी ट्रक इसी रफ्तार से गुजर गया था
हालाँकि दिन था
और उस पर एक सिपाही भी बैठा था
जो अगले चौराहे पर ट्रक रुकवा कर उतर गया था

महीनों पहले इसी तरह एक ट्रक
पटरी पर सो रहे दिन भर के थके हारे
बीसियों रिक्शा वालों को कुचलता हुआ चला गया था

सुबह पुलिस आयी
पचनामा हुआ
पोस्टमार्टम हुआ
और सब रफा दफा हो गया
न किसी ने ट्रक का पीछा किया
न पता लगाया

कभी कभी ट्रक का पीछा करना भी
मौत को न्यौता देना होता है
एक दरोगा तीन सिपाही ट्रक का पीछा करने
में ही तो मारे गये
शायद उस ट्रक पर चोरी का गांजा लदा हुआ था

इस समय तो शहर के बाहर नदी पर
पुल भी बन रहा है
शहर के दूसरे छोर पर मकान भी बन रहे है
जरूर इस ट्रक पर
चोरी की सीमेंट, ईंट, सरिया लदी होगी

आज कल चोरी की दवाएँ भी ट्रकों मे
पकड़ी जा रही है

हो सकता है दवाएँ ही लदी हों !
हो सकता है पुलिस ने कुछ दूर तक पीछा भी किया हो
ट्रक वाले से कुछ लिया हो !

या रातों रात कहीं दगा तो नही हो गया है
कही कर्फ्यू तो नहीं लग गया है
और उस दगे कर्फ्यू में मारे गये लोगों की
लाश लदी हो ट्रक पर

वकरीद का त्योहार करीव आ रहा है !
शायद वकरे लादे हों
या सेना के भगोड़े सैनिक सवार हों
इनमें से कुछ भी हो सकता है

मै नही सोच पा रहा हूँ कि आखिर
ट्रक इतना तेज क्यों भागा चला जा रहा है ?

कई वार मेरे मन में आया है कि
कमरे से वाहर निकल कर भागते हुए
ट्रक के वारे में पूछूं लेकिन तव तक
वह ट्रक पता नही कहाँ से कहाँ पहुँच जाता है
और फिर दूसरे ट्रक की आवाज
आने लगती है
फिर एक और की
फिर एक और की

ऐसे ही रोज रात के सन्नाटे मे
ट्रक पर ट्रक गुजरते रहते है
और मैं जागता रहता हूँ सोचता रहता हूँ
कि आखिर यह ट्रक
इतना तेज क्यों भागा चला जा रहा है
कहीं कुछ हो तो नही गया ?

सौदा

यह सच है कि
किसान से सौदा
महाजन करता है
महाजन से सौदा
डाकू करता है
डाकू से सौदा
पुलिस करती है
और पुलिस से भी सौदा
नेता करता है

लेकिन नेता से सौदा ?
नेता से सौदा
सिर्फ नेता करता है
और कौन
इतना नीचे गिरता है !

पकी फसल का दर्द

पकी फसल के साथ
ऐसा होता है
अक्सर ऐसा होता है
फसल कटने ही
बटाई वाले आ जाते है
और दाना भूसा सब
उठा ले जाते है

पकी फसल के साथ
ऐसा होता है
अक्सर ऐसा होता है
वह जिसके खेत की होती है
भूल कर भी उसके घर नही जाती
वह जाती है उसके घर
जिसने उसे बोया नही
जिसने उसे सीचा नही

बिल्कुल गाँव की लड़की जैसे
कन्यादान में सिर झुका कर
खड़ी हो जाती है
मुँह खोल नही सकती
कुछ बोल नही सकती।
और धीरे धीरे
तवे से उतरी रोटी की तरह
सूखती जाती है
ऐंठती जाती है

पकी फसल के साथ
ऐसा होता है
अक्सर ऐसा होता है
कभी कभी वह
कटने से पहले ही
बिक गयी होती है

कभी ऐसा भी होता है कि
कटने से पहले उसमें
जो कुछ भी रहता है
कटने पर उसमें से
वह भी नही निकलता है
और किसान पहले
हाथ मलता है
फिर पेट मलता है
फिर सिर पकड़ कर बैठ जाता है

पकी फसल के साथ
ऐसा होता है
अक्सर ऐसा होता है
उसका हँसना मुस्कुराना
हवा मे तैरना लहराना
ऊपर वाले से यानी आसमान से
देखा नही जाता
वह एक न एक दिन
पकी फसल पर फट पड़ता है

और जब आसमान फट पड़ता है
तो पकी फसल एक
खबर बन जाती है
फिर तो लोग
खबर मे रस लेने लगते है
पकी फसल के साथ
ऐसा होता है
अक्सर ऐसा होता है

अभिशापित पेड़

पहले यह पेड़ ऐसा नही था
इसकी छाया में
मदरसा लगता था
मेले जुड़ते थे
थके हारे बटोही छँहाते थे
बारातें ठहरती थी
झूले पड़ते थे
और चरवाहे अक्सर इसकी छाँह में
अहरा फूंकते दिखाई देते थे

लेकिन अब लोग
इसकी परछाई से भागते है
इसका नाम सुनते ही कांप जाते हैं
औरतें छोटे बच्चों को
इधर आने मे मना करती है

शायद यह पेड़ अभिशापित हो चुका है
और अपना विश्वास खो चुका है

ऐसा देखने मे आया है कि
इसकी छाँह में पहुँचते ही आदमी
विक्षिप्त हो जाता है
उसके चेहरे का रग बदल जाता है
उसकी दृष्टि और मानसिकता वदल जाती है
वह एकटक पेड़ को निहारने लगता है

जो इसका फल खाता है
वह अपनी बोली भूल जाता है
और पेड़ की परिक्रमा करने लगता है

हमारे गाँव के आधा से ज्यादा लोग
इस पेड के शिकार हो गये है
कितने एकटक निहार रहे हैं
कितने परिक्रमा कर रहे हैं
और जब से पेड़ की शाखाएँ
गाँव की ओर फैलने लगी है
तब से बचे खुचे लोग भी
गाँव छोड़ कर शहर भागने की
तैयारी में है

पेड़ काटने का साहस
अब किसी में नही है क्योंकि

पागल और गूंगा होने का खतरा
अभी भी बना हुआ है

अब तो कोई काली लंगड़ी आंधी ही
हमें इस अभिशापित पेड़ से
छुटकारा दिला सकती है
कुल्हाड़ियाँ और आरे नहीं

कहाँ गया वह गाँव

मैं
उसे खोज रहा हूँ जो मुझे
लोकगीत पकड़ा कर गायब हो गया है

वह मेरा गाँव था, वह गाँव जिसके पास
स्वच्छ और निर्मल जल वाले ताल थे
सघन छतनार छोटे बड़े पेड़ थे
चिड़ियों का शोर था
बच्चो की उछल कूद भाग दौड़
लुका छिपी और खिलखिलाहट थी
सहज स्नेह से सने अटपटे मीठे बोल थे

मान मनुहार और उलाहनो से भरी भरी
आयताकार आँखे थी
आँगन में गोवर की ताजगी थी

हरी हरी तुलसी थी
त्योहारों के पर्व थे मेले थे
उस जमाने के क्या कहने थे
एक एक अंग में चार चार गहने थे

तब बड़ा भाई भी पिता था
भाभी भी माँ थी
और भतीजा भी बेटा था
पच परमेश्वर था
मुखिया गाँव का मुख था

कहाँ गया वह गाँव ?
जो मुझे लोकगीत पकड़ा कर गायब हो गया है
मैं उसे खोज रहा हूँ

सुना है

सुना है
अब दूसरा कबीर नही होगा
जै हो
परिवार कल्याण विभाग की
जै हो

सुना है
लात का देवता
बात से नहीं मानता
आप से बात ही करना
बेकार है

सुना है
औरतें मेकअप करने मे
लेट हो जाती हैं

और गाड़ियाँ लेट होने पर
मेक अप करती हैं

सुना है
झूठ का एक रंग
सफेद भी होता है
सफेद रंग मुझे भी अच्छा लगता है
क्या आप अपना रंग
बताने की कृपा करेंगे ?

सुना है
जो बच्चा एक साँस में
कई गालियाँ देता है
वह आगे चल कर दरोगा होता है